Rohtas Mahila College, Sasaram 06-07-21
Dr. Aman Kumar, Dept of psychology, B.A. part III, Pr-I
2019-20

(Topic- व्यक्तित्व के सामाजिक एवं सांस्कृतिक निर्धारक):-

व्यक्तित्व के विकास एवं निर्माण पर जैविक कारकों के साथ-साथ ऐसे कारकों का भी प्रभाव पड़ता है, जिनका सम्बंध वातावरण, सामाजिक, परिस्थिति तथा संस्कृति से होता है। ऐसे कारकों को सामाजिक एवं सांस्कृतिक निर्धारक कहते हैं। इनमें निम्नलिखित निर्धारक मुख्य हैं।—

(i) समूह का प्रभाव:- व्यक्तित्व के विकास पर तीन प्रकार के समूह का प्रभाव पड़ता है - प्राथमिक समूह (Primary Group), द्वितीयक समूह (Secondary Group), तथा सन्दर्भ समूह (Reference Group)

(A) प्राथमिक समूह (Primary Group) – परिवार एक प्राथमिक समूह है। इसका प्रभाव व्यक्तित्व के विकास पर सबसे अधिक पड़ता है। बच्चों का पालन पोषण तथा उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना परिवार का दायित्व होता है। दूसरी ओर परिवार के मूल्यों, मापदण्डों, रीति-रिवाज आदि के प्रति निष्ठा तथा अनुपालन बच्चों का कर्तव्य होता है। बच्चों की प्रारंभिक आयु में जबकि व्यक्तित्व का निर्माण तेजी के साथ होता है, परिवार समाजीकरण के एक प्रधान कार्यकर्ता के रूप में कार्यरत होता है। बच्चों के समाजीकरण पर परिवार का प्रभाव विशिष्ट प्रशिक्षण तथा उनके द्वारा निर्मित नियमों के रूप में पड़ता है। इन माध्यमों से बच्चे सही गलत, अच्छा-बुरा आदि के सम्बंध में समाज द्वारा स्वीकृत सामाजिक संतुलन, शिष्टाचार आदि सीख लेते हैं। आक्रमणकारी व्यवहार, बदमिजाजी आदि समाज द्वारा अवांछित व्यवहारों पर नियंत्रण रखना भी सीख लेते हैं।

पारिवारिक उत्साह:- बच्चों के व्यक्तित्व के निर्माण पर पारिवारिक स्नेह या तिरस्कार का गहरा प्रभाव पड़ता है। विशेष रूप से माता पिता के प्रति स्नेह तथा अतिरिक्त तिरस्कार का बुरा प्रभाव उनके व्यक्तित्व विकास पर

पड़ता है। संतुलित मात्रा में स्नेह मिलने पर बच्चों में आगे चलकर संवेगात्मक स्थिरता संभव होती है। स्नेह नहीं मिलने अथवा लगातार तिरस्कार मिलने पर उनमें संवेगात्मक अस्थिरता उत्पन्न हो जाती है और वे समस्यात्मक व्यवहार करने वाले अपराधी व्यवहार से पीड़ित हो जाते हैं।

पारिवारिक शिक्षण (Learning in the family) - परिवार बच्चे के जीवन की पहली पाठशाला है और माता पिता प्रथम शिक्षक हैं। वे अपने बच्चों को कुछ व्यवहारों के लिए प्रोत्साहित करते हैं और पुरस्कार देते हैं, और कुछ व्यवहारों के लिए हतोत्साहित करते हैं और दंड देते हैं। इससे बच्चों के व्यक्तित्व शीलगुणों, उद्देश्यों एवं मूल्यों का निर्माण होता है।

माता पिता की मनोवृत्ति (Parental attitudes) - बच्चों के प्रति माता पिता की अनुकूल या प्रतिकूल मनोवृत्ति का गहरा प्रभाव बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है। जो माता पिता स्वयं समायोजित होते हैं और अपने बच्चों के प्रति स्नेह और आदर का भाव रखते हैं, उनके बच्चों में आत्मविश्वास, आशावाद, आत्म-सम्मान आदि शीलगुणों का विकास होता है। जो माता पिता स्वयं असंतुलित होते हैं और अपने बच्चों के प्रति तिरस्कार तथा घृणा का भाव रखते हैं, उनके बच्चे निराशावादी, प्रतिक्रियात्मक, समस्यात्मक आदि बन जाते हैं।

अनुकरण (Imitation) - बंडुरा (Bandura, 1963) के अनुसार बच्चे अनुकरण द्वारा सामान्य मनोवृत्तियां तथा विशिष्ट प्रतिक्रियाओं को अर्जित कर लेते हैं। बंडुरा (Bandura, 1963) आदि के अनुसार लड़के तथा लड़कियां क्रमशः अपने पिता और माता के व्यवहारों का अनुकरण करके यह सीख लेते हैं कि पुरुष तथा स्त्री को कैसा व्यवहार करना चाहिए। अतः बच्चे अपने पिता या माता को आदर्श या नमूना मानकर उनके साथ आत्मीकरण स्थापित

कर लेते हैं, और उनके व्यक्तित्व शीलगुणों को अर्जित कर लेते हैं।

(ii) द्वितीयक समूह (Secondary Group) — द्वितीयक समूह का तात्पर्य ऐसे समूह से है, जिसके सदस्यों के बीच प्राथमिक तथा निकट एवं गात्मक सम्बंध नहीं होता है। परन्तु वे एक सामान्य लक्ष्य या उद्देश्य को प्राप्त करने की ओर सक्रिय रहते हैं। इसलिए ऐसे समूह के मापदण्डों, मूल्यों तथा रीति रिवाजों का प्रभाव उनके व्यक्तित्व विकास पर स्वाभाविक रूप से पड़ता है। राजनैतिक संगठन, शैक्षिक संस्थान, धार्मिक संगठन आदि द्वितीयक समूह के उदाहरण हैं।

(c) संदर्भ समूह (Reference Group) — संदर्भ समूह ऐसे समूह को कहते हैं जिसका सदस्य फिलहाल व्यक्ति यदि नहीं हो, परन्तु सदस्य बनने की इच्छा रखता हो। ऐसे समूह के लाभ व्यक्ति आत्मीकरण स्थापित कर लेता है तथा उसके मापदण्डों एवं मूल्यों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है। यदि कोई हरिजन मुस्लिम समुदाय के साथ आत्मीकरण स्थापित करके तथा इस्लाम धर्म में दिये गये समानता सम्बंधी मूल्यों को अपने जीवन में उतारने लगे तो अवश्य ही उसमें अन्य हरिजनों की अपेक्षा भिन्न व्यक्तित्व शीलगुण विकसित हो सकते हैं।

(iii) खेल (Games) — खेल के मैदान में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्थितियों (SES) के बच्चे जमा होते हैं। उनके बीच परस्पर क्रिया (Interaction) का प्रभाव उनके व्यक्तित्व निर्माण पर पड़ता है। सामाजिक विकास, भाषा विकास, संवेगात्मक विकास तथा नैतिक विकास में बच्चे अच्छे खेलों से काफी मदद मिलती है। बच्चों को अनुशासित बनने में खेल से सहायता मिलती है।

(iii) पढ़ाई :— बच्चों में व्यक्तित्व विकास में के विकास पर पढ़ाई का गहरा प्रभाव पड़ता है। शॉ (Shaw) के अनुसार शहर तथा देहात के मध्य वाले क्षेत्रों में

अच्छे पड़ोसियों के अभाव के कारण वहाँ के बच्चों के अपराधी होने की संभावना अधिक होती है। वेलेन्टाइन (Valentine) के अनुसार औद्योगिक क्षेत्रों के बच्चे अधिक अपराधी, असामाजिक होते हैं। इसका एक प्रधान कारण अच्छे पड़ोसियों का अभाव है।

(iii) विद्यालय :- (School) :- बच्चों के समाजीकरण का एक प्रभावशाली एजेन्ट (Key Agent) विद्यालय है, जो वस्तुतः एक द्वितीयक समूह है। विद्यालय के भौतिक वातावरण, अनुशासन, शिक्षक के चरित्र, शिक्षार्थी के चरित्र आदि का प्रभाव व्यक्तित्व के निर्माण पर पड़ता है।

प्रत्येक विद्यालय के अपने विशेष मापदण्ड, मूल्य तथा अनुशासन होते हैं, जिनका पालन करना विद्यालय के छात्रों तथा छात्राओं के लिए आवश्यक होता है। फलतः उनमें उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न होती है। उपलब्धि, दृढ़कारिता, सहानुभूति, मित्रता आदि के विकास में सहायता मिलती है।

(iv) सामाजिक आर्थिक कारक :- व्यक्तित्व विकास पर सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों का गहरा प्रभाव पड़ता है। यह सत्य है कि कभी कभी गरीबी वरदान बन जाती है और अमीरी - अभिशाप, परन्तु अधिकांश परिस्थितियों में में सामाजिक एवं आर्थिक सम्पन्नता समुचित एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व के के विकास में सहायक होती है।

(v) संस्कृति और व्यक्तित्व :- व्यक्तित्व के निर्माण में संस्कृति की भूमिका को निर्धारित करने के पूर्व यह जानलेना आवश्यक होगा कि संस्कृति का क्या अर्थ है। लिंटन (Linton, 1945) के अनुसार "संस्कृति का अर्थ अर्जित व्यवहारों तथा ऐसे व्यवहार के परिणामों की समष्टि है जिसके घटक तत्वों के संचारण तथा सामेदारी समाज विशेष के सदस्यों द्वारा होते हैं। मोर्गन एवं किंग (Morgan and King, 1971) के अनुसार "संस्कृति का तात्पर्य प्रथाओं, आदतों, परम्पराओं तथा कौशलों से है, जिससे किसी व्यक्ति या सामाजिक

Scanned with CamScanner

समूह की विशेषताओं का बोध होता है।
चैपलिन (Chaplin, 1975) ने कहा है कि "एक समाज को दूसरे समाज से भिन्न करने वाले रिवाजों, कला, विज्ञान तथा धार्मिक एवं राजनैतिक व्यवहारों के समन्वित समुच्चय को संस्कृति कहते हैं।
अध्ययनों एवं निरीक्षणों से पता चलता है कि व्यक्तित्व के विकास तथा शीलगुणों के निर्माण पर संस्कृति का गहरा प्रभाव पड़ता है। संस्कृति सांस्कृतिक सापदण्ड, संस्कृति प्रतिरूप, संस्कृति समूह, संस्कृति संघर्ष आदि परिवेशों में व्यक्तित्व की रूपरेखा का निर्माण होता है।

Scanned with CamScanner